

॥ श्रीयद्दीध्वजस्तोत्रम् ॥


.. shrIchaNDIdhvajastotram ..


sanskritdocuments.org

August 20, 2017

---

.. shrIchaNDIdhvajastotram ..

——  
॥ श्रीचाण्डीध्वजस्तोत्रम् ॥

——  
Sanskrit Document Information



---

Text title : chaNDIdhvajastotra

File name : chaNDIdhvajastotra.itx

Category : devii, durgA, stotra

Location : doc\_devii

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : Vivek Singh viveksview at gmail.com

Latest update : February 22, 2013

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

August 20, 2017

*sanskritdocuments.org*

---



॥ श्रीचाण्डीध्वजस्तोत्रम् ॥

अस्य श्री चाण्डीध्वज स्तोत्र मङ्गलमन्त्रस्य । मार्कण्डेय ऋशिः ।  
अनुशतुप् छन्दः । श्रीमङ्गलक्ष्मीर्देवता । श्रां ङीजम् । श्रीं शक्तिः ।  
श्रूं डीलकम् । मम वाञ्छितार्थं कृलसिद्ध्यर्थं विनियोगः ।  
अङ्गन्यसः ।  
श्रां श्रीं श्रूं श्रीं श्रीं श्रः षति कर लृट्यादिन्यासौ ।  
श्यानन् ।  
ॐ श्रीं नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै भूत्यै नमो नमः ।  
परमानन्दरूपायै नित्यायै सततं नमः ॥ १ ॥  
नमस्तेऽस्तु मङ्गलदेवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २ ॥  
रक्षमां शरण्ये देवि धन-धान्य-प्रदायिनि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ३ ॥  
नमस्तेऽस्तु मङ्गलाङ्गी परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ४ ॥  
नमस्तेऽस्तु मङ्गलक्ष्मी परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ५ ॥  
मङ्गलसस्वती देवी परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ६ ॥  
नमो ब्राह्मी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ७ ॥  
नमो मङ्गेश्वरी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ८ ॥  
नमस्तेऽस्तु यः कौमारी परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ९ ॥  
नमस्ते वैष्णवी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १० ॥

नमस्तेऽस्तु य वाराही परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ११ ॥  
 नारसिंही नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १२ ॥  
 नमो नमस्ते धन्नाणी परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १३ ॥  
 नमो नमस्ते यामुण्डे परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १४ ॥  
 नमो नमस्ते नन्दायै परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १५ ॥  
 रक्तदन्ते नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १६ ॥  
 नमस्तेऽस्तु मडादुर्गे परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १७ ॥  
 शाकम्भरी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १८ ॥  
 शिवदूति नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ १९ ॥  
 नमस्ते भ्रामरी देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २० ॥  
 नमो नवग्रहरूपे परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २१ ॥  
 नवकूट मडादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २२ ॥  
 स्वर्णपूर्णे नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।  
 राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २३ ॥  
 श्रीसुन्दरी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।

---

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २४ ॥

नमो भगवती देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २५ ॥

दिव्ययोगिनी नमस्ते परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २६ ॥

नमस्तेऽस्तु मलादेवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २७ ॥

नमो नमस्ते सावित्री परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २८ ॥

जयलक्ष्मी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ २९ ॥

भोक्षलक्ष्मी नमस्तेऽस्तु परब्रह्मस्वरूपिणि ।

राज्यं देहि धनं देहि साम्राज्यं देहि मे सदा ॥ ३० ॥

याएडीध्वजमिदं स्तोत्रं सर्वकामकूलप्रदम् ।

राजते सर्वजन्तूनां वशीकरण साधनम् ॥ ३१ ॥

॥ श्रीयाएडीध्वज स्तोत्रम् ॥

---

.. shrIchaNDIdhvajastotram ..

Searchable pdf was typeset using XeTeXgenerateactualtext feature of Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996

on August 20, 2017

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

